खंड: 7, अंक: 12 दिसंबर 2024 RNI- DELHIN/2021/84711

ISSN- 2584-2803 (Print)

संश्लेषण

सी जी एस मासिक पत्रिका

मनमोहन सिंह तथा भारतीय अर्थव्यवस्था: अर्थनीति, राजनीति एवं लोकनीति

Aiming High, Touching Sky

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

(पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र)

दिल्ली विश्वविद्यालय

संपादक

प्रोफेसर सुनील कुमार

निदेशक, वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र, डीसीआरसी) एआरसी बिल्डिंग गुरु तेग बहादुर मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

ई-मेल आई डी: director@cgs.du.ac.in

प्रोफाइल लिंक: https://cgs.du.ac.in/directorMessage.html

संपादक मंडल

डॉ रमेश कुमार भारद्वाज

सहायक आचार्य, सरकारी पी.जी कॉलेज, जीवाजी विश्वविद्यालय, श्योपुर पाली रोड, मध्य प्रदेश, पिन कोड-476337
संयुक्त निदेशक, वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र, डीसीआरसी) एआरसी बिल्डिंग गुरु तेग बहादुर मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

ई-मेल आई डी: rkbhardwaj1@cgs.du.ac.in

प्रोफाइल लिंक: https://www.mphighereducation.nic.in

डॉ महेश कौशिक

सहायक आचार्य, श्री अरबिंदो कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, शिवालिक, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017
अध्येता, वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र, डीसीआरसी) एआरसी बिल्डिंग गुरु तेग बहादुर मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

ई-मेल आई डी: mkaushik@cgs.du.ac.in

प्रोफाइल लिंक: https://www.aurobindo.du.ac.in

डॉ संध्या वर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर, श्यामलाल कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय, जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110032
अध्येता, वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र, डीसीआरसी) एआरसी बिल्डिंग गुरु तेग बहादुर मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

ई-मेल आई डी: sverma@shyamlale.du.ac.in

प्रोफाइल लिंक: https://shyamlale.du.ac.in/wp-content/uploads/2021/11/sandhya-Verma-Political-Science.pdf

डॉ अभिषेक नाथ

सहायक आचार्य, एमएलटी कॉलेज, सहरसा; बी एन मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार।

ई-मेल आई डी: tuesdaytrack@gmail.com

प्रोफाइल लिंक: https://bpsm.bihar.gov.in/Assets2022/AssetDetails.aspx?P1=2&P2=12&P3=239&P4=3

© सीजीएस2024

संश्लेषण

मनमोहन सिंह तथा भारतीय अर्थव्यवस्थाः अर्थनीति, राजनीति एवं

अनुक्रमिका

संपादकीय

1. मनमोहन सिंह तथा भारतीय अर्थव्यवस्थाः अर्थनीति, राजनीति एवं लोकनीति
   — आस्था सेहरावत 1—4
2. भारतीय अर्थव्यवस्था को नई दिशा देने में डॉ मनमोहन सिंह के योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन — चंद्रिका आर्य 5—10
3. मनमोहन सिंह और देश में आर्थिक सुधार
   — हितेन्द्र बारगल और प्रियंका बारगल 11—15
4. मनमोहन सिंहः भारत की अर्थव्यवस्था के परिवर्तन के नायक
   — एलिन 16—21
5. भारत—अमेरिका परमाणु समझौताः एक दूरदर्शी कूटनीतिक प्रयास
   — नरेंद्र कुमार 22—25

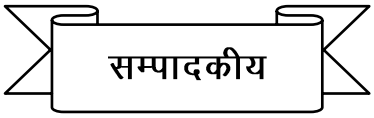

सम्पादकीय

निरंतरता, गुणवत्ता एवं महत्ता पर केन्द्रित सामरिक वाद–विषयों पर युवा शोधार्थियों से लेख आमंत्रण एवं प्रकाशन समसामयिक सामाजिक विज्ञान की एक महत्वपूर्ण चुनौती रहा है। प्रकाशन के इन महत्वपूर्ण सरोकारों और चुनौतियों के आलोक में वैश्विक अध्ययन केंद्र अपनी मासिक पत्रिका, संश्लेषण के 77वें अंक को पाठकों के समक्ष प्रेषित करते हुए अत्यंत हर्ष और उल्लास का अनुभव कर रहा है। वर्षों से प्रकाशन की इस अकादमिक यात्रा में केंद्र एक परिवार के रुप में समस्त शोधार्थियों, शिक्षार्थियों एवं विद्यार्थियों के सामूहिक प्रयासों से सामाजिक विज्ञान के प्रति अपने संकल्पित ध्येय को साकार करता आ रहा है। निरंतरता की इस कडी में संश्लेषण का यह अंश शोध के प्रति हमारी प्रतिबद्धता एवं दृढ़निश्चतता को प्रदर्शित करने का ही एक सामान्य प्रयास है।

भारत की आर्थिक प्रगति को आकार देने में मनमोहन सिंह की भूमिका देश के इतिहास में एक निर्णायक अध्याय बनी हुई है। 1991 के आर्थिक संकट के दौरान वित्त मंत्री के रूप में और बाद में 2004 से 2014 तक प्रधानमंत्री के रूप में उनका कार्यकाल अर्थशास्त्र, राजनीति और सार्वजनिक नीति के एक महत्वपूर्ण प्रतिच्छेदन का प्रतिनिधित्व करता है जिसने भारत को एक बंद अर्थव्यवस्था से एक उभरते वैश्विक खिलाड़ी में बदल दिया। सिंह का सबसे महत्वपूर्ण योगदान 1991 के संकट के दौरान उनका नेतृत्व था, जब भारत डिफॉल्ट के कगार पर था। घटते विदेशी भंडार का सामना करते हुए, सिंह ने वित्त मंत्री के रूप में अर्थव्यवस्था को उदार बनाने वाले कई क्रांतिकारी सुधारों का नेतृत्व किया। इनमें व्यापार उदारीकरण, विनियमन और निजीकरण सम्मिलित थे, जिसने दशकों तक तेज आर्थिक विकास के लिए मंच तैयार किया। उनकी रणनीतिक दृष्टि और तकनीकी विशेषज्ञता ने भारत को एक अधिक खुली और वैश्विक रूप से एकीकृत बाजार अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर किया। प्रधानमंत्री के रूप में, सिंह की नीतियों ने विकास, राजकोषीय अनुशासन व बुनियादी ढाँचे के विकास पर जोर देना जारी रखा। उनकी सरकार ने गठबंधन को राजनीति की जटिलताओं को पार किया, विविध क्षेत्रीय व वैचारिक ताकतों की माँगों को संतुलित किया। तथापि, सिंह के आर्थिक एजेंडे को महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ा। जबकि भारत ने सुदृढ़ जीडीपी वृद्धि देखी, आय असमानता बढ़ी और विकास के लाभ असमान थे। इसके अतिरिक्त, राजनीतिक घोटालों और भ्रष्टाचार के आरोपों ने उनके कार्यकाल के अंतिम वर्षों को प्रशनचिन्हित किया, जिससे शासन और जवाबदेही पर प्रशन उठे।

सार्वजनिक नीति के संदर्भ में, सिंह की विरासत मिश्रित है। उनके सुधारों ने भारत के आर्थिक आधुनिकीकरण की नींव रखी, किंतु समावेशी विकास, शासन और सामाजिक समानता के मुद्दे महत्वपूर्ण चुनौतियां बने हुए हैं। सिंह का कार्यकाल आर्थिक नीति निर्माण और एक विविध लोकतंत्र की राजनीतिक वास्तविकताओं के बीच जटिल संबंधों को रेखांकित करता है। भारत के आर्थिक उत्थान पर उनका प्रभाव निर्विवाद है, किंतु आगे की राह विकास के व्यापक सामाजिक–राजनीतिक निहितार्थों पर व अधिक चिंतन की मांग करती है।

विषय की महत्ता तथा विमर्श की समसामयिकता को ध्यान में रखते हुए केंद्र ने 'मनमोहन सिंह तथा भारतीय अर्थव्यवस्थाः अर्थनीति, राजनीति एवं लोकनीति' विषय पर लेख आमंत्रित किये। उत्कृष्ट लेखों को सम्पादकीय मंडल ने चयनित किया जो आप सभी के समक्ष एक प्रकाशित पत्रिका के रूप में उल्लेखित हो रहे हैं। ये समस्त लेख मौलिक होने के साथ–साथ विषय के परिदृश्य के बहुआयामी विषयों को भी संबोधित करते हैं। स्वतंत्र चिंतन पर आधारित लेखकों के विचार उनकी रचनात्मकता, सृजनात्मकता एवं मौलिकता को प्रदृशित करने का एक सर्वनिष्ठ प्रयास, प्रयत्न और परिणाम है।

संपादक मंडल मंगलवार, 14 जनवरी 2025

1

मनमोहन सिंह तथा भारतीय अर्थव्यवस्था की एक नई आर्थिक दिशा

आस्था सेहरावत

जीसस एंड मैरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

वैश्वीकरण ने नई चुनौतियाँ पेश की हैं, लेकिन यह अवसरों की भी भरमार लाता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसे कैसे संभालते हैं।

– डॉ. मनमोहन सिंह

प्रस्तावनाः

डॉ. मनमोहन सिंह का जन्म 26 सितंबर, 1932 को गाह (अब पाकिस्तान) में एक सिख परिवार में हुआ था। उनका प्रारंभिक जीवन कठिनाइयों से भरा था, खासकर 1947 में भारत के विभाजन के दौरान, जब उनका परिवार भारत आकर अमृतसर में बस गया। उन्होंने अमृतसर के विभिन्न स्कूलों में शिक्षा प्राप्त की और फिर पंजाब विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में डिग्री हासिल की। इसके बाद उन्होंने यूके के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से डी.एससी. की उपाधि प्राप्त की।

शिक्षा पूरी करने के बाद, मनमोहन सिंह ने प्रोफेसर और अर्थशास्त्री के रूप में काम किया। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र और भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में आर्थिक नीतियों और विकास पर काम किया। 1980 के दशक में भारत की आर्थिक चुनौतियों के दौरान, उनकी अर्थशास्त्र में पकड़ ने उन्हें आर्थिक नीति निर्माण में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बना दिया।

राजनीति में प्रवेश

1991 में, भारत एक गंभीर भुगतान संतुलन संकट का सामना कर रहा था। देश के पास विदेशी मुद्रा भंडार बहुत कम था, मुद्रास्फीति उच्च थी, और अर्थव्यवस्था अस्त–व्यस्त थी। इस संकट के दौरान, तत्कालीन प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव ने मनमोहन सिंह को वित्त मंत्री नियुक्त किया। सिंह ने उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण जैसे आर्थिक सुधारों की शुरुआत की, जिसने भारत की अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा दी।

वित्त मंत्री के रूप में भूमिकाः

मनमोहन सिंह का कार्यकाल भारत के आर्थिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। उन्हें 1991 के आर्थिक संकट से भारत को उबारने और अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने का श्रेय दिया जाता है।

आर्थिक सुधार और उदारीकरणः

• भुगतान संकट प्रबंधनः सिंह और उनकी टीम ने अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) से ऋण प्राप्त किया, जिसके लिए भारत को आर्थिक सुधार लागू करने की शर्त रखी गई। इसके तहत जुलाई 1991 में भारतीय रुपये का अवमूल्यन किया गया, जिससे निर्यात प्रतिस्पर्धी बना और विदेशी पूंजी आकर्षित हुई।

• औद्योगिक लाइसेंसिंग नीति में सुधारः सरकारी अनुमति की आवश्यकता वाले उद्योगों की संख्या कम की गई। सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों का आंशिक निजीकरण शुरू किया गया।

• कर सुधारः आयकर दरों में कमी और कर ढांचे को सरल बनाया गया। कॉर्पोरेट कर दरों में भी कमी की गई।

• विदेशी व्यापार नीतिः आयात लाइसेंसिंग प्रणाली को कम किया गया और निर्यात को प्रोत्साहित किया गया। विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (FEMA) लागू किया गया।

• पूंजी बाजार सुधारः पूंजी बाजारों को अधिक पारदर्शी और सुरक्षित बनाने के लिए SEBI को एक नियामक निकाय के रूप में स्थापित किया गया।

सुधारों का प्रभावः

• जीडीपी वृद्धिः सिंह के कार्यकाल के दौरान भारत की जीडीपी वृद्धि दर 6–7% तक पहुंच गई।

• राजकोषीय घाटे में कमीः कर सुधार और सरकारी खर्च में कटौती के माध्यम से राजकोषीय घाटे को नियंत्रित किया गया।

• आत्मनिर्भरताः भारतीय अर्थव्यवस्था आयात पर निर्भरता कम हो गई, जिससे बाहरी झटकों से सुरक्षा मिली।

प्रधानमंत्री के रूप में कार्यकाल (2004–2014):

मनमोहन सिंह ने 22 मई, 2004 से 26 मई, 2014 तक भारत के 14वें प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया। उनका कार्यकाल आर्थिक विकास, वैश्विक सहयोग और सामाजिक कल्याण के लिए जाना जाता है, हालांकि उनकी सरकार भ्रष्टाचार के आरोपों और राजनीतिक अस्थिरता के कारण आलोचनाओं का सामना भी करती रही।

सत्ता में उदयः

संजय बारू की पुस्तक द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर के अनुसार, सिंह एक अनपेक्षित उम्मीदवार थे, जिन्हें 2004 में सोनिया गांधी के इनकार के बाद प्रधानमंत्री बनाया गया। उनकी तकनीकी पृष्ठभूमि और आर्थिक विशेषज्ञता ने उन्हें इस पद के लिए उपयुक्त बनाया।

विदेश नीति और वैश्विक सहयोगः

• भारत–अमेरिका परमाणु समझौताः 2005–2008 के दौरान हुए इस समझौते ने भारत की परमाणु अलगाव को समाप्त किया और नागरिक परमाणु प्रौद्योगिकी तक पहुंच प्रदान की।

• क्षेत्रीय कूटनीतिः पाकिस्तान, श्रीलंका और बांग्लादेश के साथ संबंधों को मजबूत करने का प्रयास किया गया, हालांकि 26/11 मुंबई हमलों के बाद पाकिस्तान के साथ संबंध तनावपूर्ण रहे।

• वैश्विक नेतृत्वः भारत ने BRICS और G20 जैसे बहुपक्षीय संगठनों में सक्रिय भूमिका निभाई।

भ्रष्टाचार के आरोपः

सिंह के कार्यकाल के दौरान कई भ्रष्टाचार घोटाले सामने आए, जिन्होंने UPA सरकार की छवि को धूमिल किया।

• 2जी स्पेक्ट्रम घोटालाः यह भारत के सबसे बड़े भ्रष्टाचार घोटालों में से एक था। हालांकि सिंह पर कोई सीधा आरोप नहीं लगा, लेकिन उनकी निष्क्रियता पर सवाल उठे।

• कॉमनवेल्थ गेम्स और कोलगेट घोटालाः 2010 के कॉमनवेल्थ गेम्स और कोयला आवंटन घोटाले ने सरकार की विश्वसनीयता को कमजोर किया।

निष्कष

मनमोहन सिंह की विरासत एक मिश्रित छवि प्रस्तुत करती है। उन्हें भारत को एक आर्थिक महाशक्ति बनाने और वैश्विक मंच पर देश की स्थिति को मजबूत करने का श्रेय दिया जाता है। हालांकि, भ्रष्टाचार के मुद्दों पर उनकी निष्क्रियता और दूसरे कार्यकाल में सुधारों को आगे बढ़ाने में असमर्थता ने उनकी छवि को धूमिल किया। फिर भी, उनका मानना था कि वैश्वीकरण और रणनीतिक साझेदारी भारत के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

मनमोहन सिंह ने भारत को एक नई आर्थिक दिशा दी, लेकिन उनकी विरासत चुनौतियों और उपलब्धियों का एक मिश्रण है।

♦♦♦♦♦

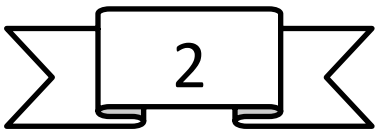

भारतीय अर्थव्यवस्था को नई दिशा देने में डॉ मनमोहन सिंह के योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन

चंद्रिका आर्य

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

दस वर्षों तक भारत के प्रधानमंत्री पद पर काबिज रहे महान अर्थशास्त्री डॉ. मनमोहन सिंह ने भारतीय अर्थव्यवस्था को बुलंदियों की तरफ अग्रसर करने और नई दिशा देने में अहम भूमिका निभाई है। अनेक अवसरों पर संकट से जूझती भारतीय अर्थव्यवस्था को अपने सटीक निर्णयों और सुझावों से उबारने में सफलता हासिल की है। यह पेपर सर्वप्रथम डॉ. मनमोहन सिंह के व्यक्तिगत जीवन और अनुभवों पर चर्चा करेगा तत्पश्चात भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए महत्वपूर्ण आर्थिक सुधारों और उनके प्रभावों का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष की तरफ बढ़ेगा।

डॉ. मनमोहन सिंह व उनका व्यक्तित्व

डॉ. मनमोहन सिंह ने अर्थशास्त्र में अपनी पढ़ाई पूरी करके दिल्ली यूनिवर्सिटी के दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स में कुछ समय तक अध्यापन का कार्य किया परंतु उनका असल जीवन शुरू होता है वर्ष 1966 में जब उन्हें यूएन सम्मेलन के लिए आर्थिक मामलों के अधिकारी के रूप में चुना गया। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा और लगातार एक के बाद एक नई बुलंदियों को छूते हुए भारत के प्रधानमंत्री पद पर पहुंच गए। परंतु पीएम पद तक पहुंचने के अपने सफर में उन्होंने अनेक पदों पर रहते हुए अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया था, जैसे वर्ष 1971 में उन्हें भारत के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय में आर्थिक सलाहकार के तौर पर नियुक्त किया गया और बहुत थोड़े समय बाद ही उनके अविश्वसनीय कार्यों को देखते हुए इंदिरा गांधी ने 1972 में उन्हें वित्त मंत्रालय के मुख्य सलाहकार के पद पर काबिज कर दिया, तत्पश्चात वो पीएम के आर्थिक सलाहकार भी रहे। वर्ष 1982 से 1985 तक डॉ. मनमोहन सिंह रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के गवर्नर रहे और इसके बाद 1991 में उन्हें सांसद के रूप में असम से राज्यसभा भेजा गया और नरसिम्हा राव की सरकार में वित्त मंत्रालय का कार्यभार सौंपा गया, ये वो समय था जब भारतीय

अर्थव्यवस्था कंगाली के दौर से गुजर रही थी परंतु डॉ मनमोहन सिंह ने अपने अनुभवों के सहारे इसे डूबने से बचा लिया। इतना ही नहीं बल्कि वर्ष 1998 से 2004 तक अटल बिहारी वाजपेई के पीएम रहते मनमोहन सिंह राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष के पद पर काबिज रहे। इनके अलावा वो योजना आयोग के उपाध्यक्ष, यूजीसी के चेयरमैन जैसे अनेक पदों पर विराजमान रहे। 1991 से लेकर 3 अप्रैल, 2024 तक लगातार 33 वर्षों तक (6 बार) राज्यसभा में सांसद रहे। उनके जीवन की उपरोक्त महान सफलताओं के अलावा उनके नाम एक असफलता भी है, अपने जीवन में केवल एक बार उन्होंने 1999 में दक्षिणी दिल्ली सीट से लोकसभा का चुनाव लड़ा और भाजपा के विजय मल्होत्रा से हार गए। पूरे जीवन में बड़ी उपलब्धियों और जीतों के साथ ये एक असफलता भी उनके नाम है जिससे ये भी साफ होता है कि वो राजनीति नहीं बल्कि अर्थशास्त्र के महान खिलाड़ी थे और अपनी इसी काबिलियत के चलते उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था की दशा और दिशा बदल दी। आज भारतीय अर्थव्यवस्था जिन नियमों, निर्देशों और रास्तों पर अग्रसर है उनके निर्माण में सबसे ज्यादा या यूं कहें कि सारा योगदान महान अर्थशास्त्री डॉ मनमोहन सिंह का है। आज हम उनके दिखाए और बनाए रास्तों पर चलते हुए विकास के नए कीर्तिमानों को स्थापित और प्राप्त कर रहे हैं।

भारत में 1991 का आर्थिक संकट और उससे उबारने में डॉ मनमोहन सिंह की भूमिका

भारतीय अर्थव्यवस्था में 1990 के दशक को कभी नहीं भुला जा सकता क्योंकि पाकिस्तान के साथ युद्ध (1971), उसके बाद आंतरिक आपातकाल, शेयर बाजार में हो रहे घपले और फिर अस्थिर और भ्रष्टाचार में लिप्त सरकारों के चलते भारतीय अर्थव्यवस्था लगातार संकट की तरफ बढ़ती जा रही थी। सरकार के खर्चे उसकी कमाई से ज्यादा हो रहे थे और आवश्यक समानों का निर्यात कम व आयात ज्यादा हो रहा था।

इसके साथ ही उत्पादन के क्षेत्र में सरकारी नियंत्रण, उद्योगों के लिए लाइसेंस और इंस्पेक्टर राज प्रणाली और विदेशी निवेश पर प्रतिबंध के कारण भारत में आर्थिक संकट पनपने लगा।

इसके अलावा 1990 में खाड़ी युद्ध के चलते आसमान छू रही कच्चे तेल की कीमतों ने भी भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए मुश्किलें खड़ी कर दी और आईएमएफ से कर्ज उधार लेने के बावजूद जून 1991 में भारत के पास आवश्यक समान आयत करने के लिए केवल 15 से 20 दिनों का ही विदेशी भंडार बचा था।

परंतु इस भारी आर्थिक संकट से उबारने के लिए अब आए नरसिम्हा सरकार में वित्तमंत्री डॉ मनमोहन सिंह और इन्होंने उदारीकरण की नीति का ऐलान करके भारतीय अर्थव्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव की पटकथा लिख दी। उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (जिसमें वस्तु का कितना उत्पादन होगा और उसकी कितनी कीमत होगी, इसका फैसला सरकार नहीं बल्कि बाजार पर छोड़ दिया गया) की नीति अपनाने से भारतीय अर्थव्यवस्था और शेयर बाजारों में कई गुना बढ़ोतरी हुई और एक बार फिर भारत विकास के पथ पर अग्रसर होना शुरू हुआ।

24 जुलाई 1991 को केंद्रीय बजट पेश करते हुए डॉ मनमोहन सिंह ने कहा था हमारे पास अब समय बर्बाद करने का कोई अवसर नहीं है। ना तो सरकार और ना ही अर्थव्यवस्था साल दर साल अपनी क्षमता से ज्यादा खर्च कर सकती है और ना ही उधार पर निर्भर रह सकती है, इसलिए अब हमें बाजार की ताकतों के संचालन के लिए नए दायरे और क्षेत्र का विस्तार करने की आवश्यकता है। अर्थात मनमोहन सिंह का इशारा साफ था कि अब समय की जरूरत है जब भारतीय बाजार को उदारीकरण के लिए खोलना और सरकारी नियंत्रण से मुक्त करने से ही अर्थव्यवस्था की रफ्तार को गति मिलेगी।

इन सुधारों में सर्वप्रथम उन्होंने निर्यात की प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए डॉलर सहित बड़ी अंतरराष्ट्रीय मुद्रा के मुकाबले रुपए का 20ः अवमूल्यन कर दिया जिससे हमरा निर्यात सस्ता हो गया और अंतरराष्ट्रीय बाजार की बड़ी कंपनियों ने भारत में दस्तक दी, जो हमारे बिगड़ते व्यापार संतुलन के लिए लाभकारी साबित हुआद्य इसके साथ ही इससे उद्योगों में भारतीयों के लिए नौकरियों के अवसरों में भी बढ़ोतरी देखने को मिली।

इन सुधारों ने उद्योगों को लाइसेंसिंग और इंस्पेक्टर राज से मुक्त कर विदेशी निवेश को संभव बनाया। इन्हीं सुधारों के बाद इंडसइंड, आईसीआईसीआई और एचडीएफसी जैसे निजी क्षेत्र के बैंकों के लिए रास्ता खुला और तत्पश्चात मैकडी, केएफसी जैसी फूड से जुड़ी कई अंतरराष्ट्रीय कम्पनियां भारत आ सकी और इससे अर्थव्यवस्था फलने फूलने के साथ ही भारतीयों को वैश्विक फ्लेवर का स्वाद चखने का भी अवसर प्राप्त हुआ।

डॉ मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्री रहते आर्थिक सुधारों के क्षेत्र में योगदान

पीएम बनने के उपरांत वर्ष 2005 में ही उन्होंने अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में बड़ा कदम उठाते हुए पूरे देश में पुराने जटिल सेल्स टैक्स की व्यवस्था को खत्म कर नई टैक्स व्यवस्था वैट (VAT & Value added Tax) लागू कर दी, जिसका भरपूर लाभ उद्योगों को मिला।

इसके अलावा कारोबार व उद्योगों पर टैक्स के बोझ को कम करने के लिए सर्विस टैक्स व्यवस्था की शुरुआत की।

वर्ष 2006 में देश के प्रत्येक कोने में ष्स्पेशल इकोनॉमिक जोनष् की शुरुआत की जहां पर उद्योगों को जमीन से लेकर बाकी सब सुविधाएं आसानी से मिलने लगी और सभी उद्योग एक जगह पर स्थापित होने लगे जिससे उत्पादों के परिवहन खर्च और समय में बचत होने लगी।

और सबसे महत्वपूर्ण 2007–08 में जब पूरा विश्व मंदी का सामना कर रहा था तब भारत भी उस मंदी का शिकार हो सकता था, परंतु डॉ मनमोहन सिंह की सूझबूझ और अनुभव से भारत ने ना केवल अपने आप को इस मंदी की चपेट में आने से बचा लिया बल्कि यही वह वर्ष था जब भारत की वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर रिकॉर्ड 10.08ः तक पहुंच गई और इसके साथ ही भारत ने दुनिया की दूसरी सबसे तेजी से बढ़ती और विकसित होती मुख्य अर्थव्यवस्था के रूप में वैश्विक पटल पर अपनी पहचान स्थापित की।

भारतीय अर्थव्यवस्था में अपने अहम योगदान के साथ डॉ मनमोहन सिंह को भी आलोचनाओं का सामना करना पड़ा है, जैसे पीआर पंचमुखी ने ईपीडब्ल्यू में छपे सोशल इंपैक्ट ऑफ इकोनॉमिक रिफॉर्म इन इंडियाः अ क्रिटिकल अप्रेजल नामक अपने लेख में डॉ मनमोहन सिंह द्वारा 1991 में किए गए सुधारों की आलोचना करते हुए कहा है कि इन सुधारों के बाद भारत में सामाजिक क्षेत्र जिसमें मुख्य रूप से षशिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं शामिल हैं का बजट कम हो गया है और सरकारों का सारा ध्यान उद्योगों और औद्योगिकीकरण पर स्थानांतरित हो गया है। इसके परिणाम स्वरूप भारत में जीवन और शिक्षा का स्तर निरन्तर घटता जा रहा है। उन्होंने योजना आयोग की एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि एक व्यक्ति के शरीर को आवश्यक कैलोरी से नीचे प्राप्त करने वालों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है, वर्ष 1987–88 में आवश्यक से कम कैलोरी पाने वालों की संख्या 65.8% थी वहीं 1993–94 में यह संख्या बढ़ कर 70% हो गई है। इसके अलावा शिक्षा के क्षेत्र में बजट कम होने से स्कूलों में आवश्यक आधारभूत सुविधाओं और अध्यापकों का अभाव है। लेखक ने इन आर्थिक सुधारों जिनमें सामाजिक क्षेत्र को अपवर्जित किया गया है को भारत के भविष्य के लिए नुकसानदायक माना है।

परंतु इन सबके बावजूद 1991 में उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था के नए युग का सूत्रपात किया और तीन दशकों के दौरान वित मंत्री, प्रधानमंत्री जैसे शीर्ष पदों पर रहते हुए उनके द्वारा किए गए

सुधार भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए वरदान साबित हुए हैं और वैश्विक स्तर पर भारत को मजबूती से स्थापित करने में अहम योगदान दिया है।

संदर्भ सूची

- Nagaraj, R. (1997). What has happened since 1991? Assessment of India's economic reforms. Economic and political weekly, pp. 2869-2879, Vol. 32, No. 44.
- Panchamukhi, P R. (2000). Social impact of economic reforms in India. A critical appraisal. Economic and political weekly, pp. 836-847, Vol. 35, No. 10
- Prabhu, N. December 27, 2024. Manmohan Singh- a hero of Indian middle class. The Hindu. https://www.thehindu.com/business/manmohan-singh-a-hero-of-indian-middle-class/article69032762.ece
- Vivek, S. Manmohan Singh's key reforms that shaped Indian economy, December 27, 2024. Indian Today. https://www.indiatoday.in/business/story/manmohan-singh-death-3-key-economic-reforms-liberalisation-licence-raj-mnrega-shaped-modern-india-2656013-2024-12-27
- Manmohan Singh's contributions as architect of India's economic reforms have left indelible mark, December 27, 2024, The Hindu. https://www.thehindu.com/news/national/singhs-contributions-as-architect-of-indias-economic-reforms-have-left-indelible-mark-rbi-governor-sanjay-malhotra/article69032286.ece

♦♦♦♦♦

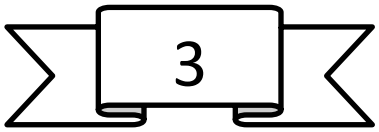

मनमोहन सिंह और देश में आर्थिक सुधार

हितेन्द्र बारगल

सहायक प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय, (म.प्र.), भारत

प्रियंका बारगल

शोधार्थी, अर्थशास्त्र अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, (म.प्र.), भारत

माना कि तेरी दीद के काबिल नहीं मैं, पर तू मेरा शौक तो देख मेरा इंतजार तो देख

—मनमोहन सिंह

एशिया के महानतम वित्त मंत्री कहलाने वाले मनमोहन सिंह आज हमारे बीच शारीरिक रूप से भले ही मौजूद न हो पर उनके द्वारा बनाई गई आर्थिक, सामाजिक नीतियाँ हर भारतीय की नसों में अनवरत प्रभावित होती रहेगी घ सिंह उन चुनिंदा भारतीय नेताओं में से एक थे, जिन्हांने अपनी काबिलियत का लोहा अपने विरोधियों के बीच भी मनवाया, भले ही वह कम बोलते थे, पर उनके द्वारा लिए गए निर्णय, उनके द्वारा बनाई गई आर्थिक नीतियां, सदियों तक भारतीय अर्थव्यवस्था को गुंजायमान करती रहेगी।

जैसा की सर्वविदित है कि मनमोहन भारत के 13वें प्रधानमंत्री थे, इन्हें आर्थिक सुधारो का जन्मदाता कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी, इन्होंने आर्थिक उदारीकरण को एक शस्त्र के रूप में अपनाया था। मनमोहन सिंह का जन्म आजादी से पूर्व वर्तमान पाकिस्तान में हुआ, बचपन में संघर्ष होने के बावजूद यह पढ़ाई में शुरू से ही अव्वल रहे, स्थानीय शिक्षा होने के पश्चात पंजाब यूनिवर्सिटी, यूके मं अध्यनरत होने तथा ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से पी.एच.डी करने के बाद इनको जॉन रॉबिंसन तथा निकोलस कोल्डर जैसे महान अर्थशास्त्रीयो का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, इन्होंने अपने करियर की शुरुआत सर्वप्रथम वरिष्ठ व्याख्याता से की, इसके बाद ये प्रोफेसर

बने, इसके अलावा इन्होंने यूनाइटेड नेशनल ऑर्गेनाइजेशन के साथ भी काम किया तथा 1982 में भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर का पद शोभायमान किया, वहीं 1985 में ये योजना आयोग के साथ जुड़े तथा जून 1991 में इनकी काबिलियत और दूरदर्शिता को देखते हुए पी.वी. नरसिम्हा राव द्वारा इन्हें वित्त मंत्री बना दिया गया। चेंजिंग इंडिया उनकी आत्मकथा का नाम है।

मनमोहन सिंह ऐसी स्थिति में वित्त मंत्री बनाए गए थे जबकि भारत बहुत बड़े आर्थिक संकट का सामना कर रहा था तथा इस समस्या के निराकरण के रूप में भारत का सोना तक गिरवी रखने की नौबत आ गई थी, किंतु मनमोहन सिंह ने न केवल इस समस्या से भारतीय अर्थव्यवस्था को उबारा,बल्कि उदारीकरण की नीति अपनाते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था के भविष्य को भी सुनहरा कर दिया तथा भारतीय अर्थव्यवस्था के द्वार विदेशी कम्पनी के लिए खोल दिए, जिससे न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी सफलता की दौड़ में आगे बढ़ने लगी, बल्कि विदेशी तकनीकी को भी भारतीय अर्थव्यवस्था को जानने और समझने का मौका मिला,जिससे सफलता के नए–नए द्वार खुलते चले गए तथा भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक बनती चली गई। विदेशी व्यापार को पहले से आसान कर दिया गया, इसके अलावा सरकारी उद्योग जो बहुत समय से बीमार (घाटे में) चल रहे थे, के लिए उन्होंने बड़ी–बड़ी नीतियाँ बनाई तथा अर्थ नीति से राजनीति की ओर कदम बढ़ाएद्य जब वे वित्त मंत्री बनाये गए थे, उस समय राजकोषीय घाटा लगभग 8-9% तथा चालू खाता घाटा लगभग 3-5% तथा विदेशी भंडार भी बहुत कम था पर इन सारी समस्याओ का हल उनके मार्गदर्शन द्वारा धीरे–धीरे निकाल लिया गया। लाइसेंस परमिट राज समाप्त करने में भी मनमोहन सिंह की अग्रणी भूमिका रहीद्य उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण को राव–मनमोहन मॉडल के रूप में भी जाना जाता है।

कुछ समय पश्चात् सिंह के करियर की गति ने राह मजबूत की तथा 2004 में कांग्रेस की अभूतपूर्व सफलता के पश्चात वे देश के 13 वें प्रधानमंत्री बनाए गए। अपने कार्यकाल में उन्होंने सर्वप्रथम देश की आम जनता के स्वास्थ्य व शिक्षा पर मजबूती से ध्यान दिया तथा इस हेतु बहुत सारी योजनाएं उनके द्वारा लाई गई यथा, 2005 में राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन, किसानों को कर्ज से राहत, 2005 में बिक्रीकर के स्थान पर मूल्य वर्धित कर लाकर सिंह ने कर के क्षेत्र में क्रांति ला दी, 2006 में महात्मा गाँधी ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) उनके दिमाग की ही उपज थी ,जिसमें आसपास की जगहों पर ही आम जनता को काम मिलने लगा तथा इसमें भी

काम मिलने की सर्वप्रथम प्राथमिकता घर की महिलाओं को दी गई, जिससे सामाजिक सुरक्षा को भी बढ़ावा मिला 2009 में उन्होंने शिक्षा को और आगे बढ़ाते हुए, 6 से 14 वर्ष तक के बालक–बालिकाओं की शिक्षा को सुगम बनाया तथा इसमें सर्व शिक्षा अभियान को भी जोड़ा। वर्ष 2009 में उनके द्वारा देश के नागरिको की सुरक्षा एवं पहचान हेतु आधार (यूआइडीएआइ 12 अंकों का डिजिटल नंबर) जो भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण के नाम से जाना जाता है,लाया गया, जो अपने समय की बहुत बड़ी डिजिटल क्रांति थी, तथा जो आज भी उपयोग में लाई जा रही है। 2 जुलाई 2009 को आरटीई अधिनियम लागु किया जाना भी इनके प्रयासों से ही संभव हो पाया। सिंह के कार्यनीतियं को देखते हुए पी.चिंदबरम द्वारा उनकी तुलना चीन के महान अर्थशास्त्री से की गई।

मनमोहन सिंह की इतनी सफलताआं व इतनी अच्छी सुधार नीतियों के बावजूद भी उन्हें 'कांग्रेस की कठपुतली' या कम बोलने के कारण उपासना का पात्र बनना पड़ता था, उनके दूसरे कार्यकाल में इन पर भ्रष्टाचार का आरोप लगा, इन्हीं के समय में 2G स्पेक्ट्रम, कोयला घोटाला हुआ तथा अन्ना हजारे द्वारा आम जनता के अधिकारों की सुरक्षा के लिए जन लोक पाल अधिनियम लाए जाने के प्रयास किये गए।

इनके ऊपर जो एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर फिल्म बनाई गई थी,वह भी विवादित रही थी, किंतु इन सब के बावजूद भी वे सारी आलोचनाओं का अपने कार्यों से तगड़ा जवाब देते रहे तथा अपने विरोधियों को भी अपनी प्रशंसा करने पर मजबूर करते रहे।

प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव द्वारा मनमोहन सिंह जी को यह भी नसीयत दी गई थी कि– उदारीकरण की जो भी योजनाएं आप ला रहे हैं वह अगर सफल हुई तो इसका लाभ तो पूरे देश को मिलेगा पर अगर असफल रही तो इसका ठीकरा केवल और केवल आप पर ही फूटेगा, इतना सब कुछ सहन करने के बावजूद भी मनमोहन सिंह जी ने अपने कदम पीछे नहीं किये तथा आज देश में वर्तमान सत्तारुढ़ दल भी सिंह की बहुत सी नीतियों का अनुसरण कर रहा है। 2012 में दिल्ली में हुए बलात्कार और हत्या पर इन्होंने तीन बेटियों के पिता होने का हवाला देते हुए भी इस मुद्दे को शांति से हल किए जाने का अनुरोध किया था, जिससे समस्या का समाधान भी हो जाये और देश का माहौल भी न बिगड़े द्य मनमोहन सिंह को दुनिया के सबसे सम्मानित नेताओं में से एक और असाधारण शालीनता का व्यक्ति बताया गया है।

फोर्ब्स पत्रिका ने जहां नेहरू के बाद मनमोहन सिंह को भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रधानमंत्री बताया वही टाइम पत्रिका ने उन्हें 'अंडर एचीवर' बताते हुए कहा था कि वह ऐसे सुधारो पर काम नहीं करना चाहते जिससे देश का विकास हो ,'रात का चौकीदार' और 'गांधी परिवार के कठपुतली' कहे जाने वाले सिंह को अब मरणोपरांत अपने स्मारक के लिए जमीन की तलाश है, किन्तु इतिहास उन्हें सदैव उनकी आर्थिक नीतियों के लिए याद करेगा।

टिप्पणी

उदारीकरण–

उदारीकरण के अंतर्गत शराब ,सिगरेट, दवाई, खतरनाक रसायन और विस्फोट आदि को छोड़ते हुए सभी के लिए औद्योगिक लाइसेंस को खत्म कर दिया गया था तथा बाजार को मूल्य निर्धारण करने की अनुमति प्रदान कर दी गई थी।

वैश्वीकरण–

वैश्वीकरण के तहत देश की अर्थव्यवस्था को बंद न रखते हुए पुरे विश्व से व्यापार (आयात–निर्यात) करने हेतु खोल दिया जाता है।

निजीकरण–

निजीकरण का अर्थ सार्वजनिक क्षेत्र के स्वामित्व वाले क्षेत्रो से निजी व्यक्तियों या निजी गैर दृ लाभ संगठनों को स्थानांतरित किये जाने की प्रक्रिया से लगाया जाता है।

संदर्भ सूची

- https://www.jansatta.com/business/manmohan-singh-career-highlights-role-in-indian-economy-liberalisation-1991-economic reforms/3750151/https://dainik.bhaskar.com/8IlCrCn1EPbhttps://www.bbc.com/hindi/india-57953959https://inc.in/our-inspiration/dr-manmohan-singh https://hindi.economictimes.com/news/after-all-why-did-dr-manmohan-singh-become-synonymous-with-liberalization-how-did-that-policy-change-the-indian-economy/articleshow/116715376.cms https://www.bbc.com/hindi/articles/c4gjdjrxxl0o https://yourstory.com/hindi/manmohan-singh-big-decisions-economy-privatisation-liberalisation-nuclear-deal-mnrega-highest-gdp-growth https://www.nipfp.org.in/blog/2024/12/27/manmohan-singh-leader-who-opened-indian-economy/

♦♦♦♦♦

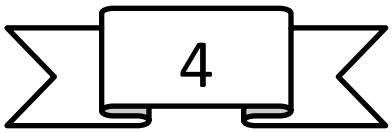

मनमोहन सिंहः भारत की अर्थव्यवस्था के परिवर्तन के नायक

एलिन

विद्यार्थी, जिसस एंड मेरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉक्टर मनमोहन सिंह भारतीय अर्थव्यवस्था के शिल्पकारों में से एक माने जाते हैं, जिन्होंने न केवल एक प्रखर अर्थशास्त्री के रूप में बल्कि एक कुशल राजनेता के रूप में भी देश की आर्थिक दिशा को नए सिरे से IA परिभाषित किया। 1991 में जॉब भारत गंभीर आर्थिक संकट से जूझ रहा था, तब तत्कालीन वित्त मंत्री के रूप में उन्होंने उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG) की नीतियों को लागू कर भारतीय अर्थव्यवस्था को मुक्त बाजार की ओर अग्रसर किया, जिससे देश में विदेशी निवेश बढ़ा, ओद्यौगिक विकास को गति मिली और करोड़ों लोग को रेखा से बाहर निकलने का अवसर मिला। इसके बाद, जब वे 2004 से 2014 तक भारत के प्रधानमंत्री रहे, तब उनकी आर्थिक नीतियों ने देश को एक स्थिर और तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी नीतियों में ग्रामीण विकास, वित्तीय समावेशन और सामाजिक सुरक्षा पर विशेष जोर दिया गया, जिससे भारत की आर्थिक और सामाजिक संरचना को मजबूती मिली। यह लेख मनमोहन सिंह के आर्थिक योगदान, उनके राजनीतिक सूझबूझ और लोक नीतियों के प्रभाव का विश्लेषण करेगा, विशेष रूप से यह समझने का प्रयास करेगा कि कैसे उनकी आर्थिक रणनीतियां आज भी आर्थिक नीतियों को प्रभावित कर रही है। उनके कार्यकाल के दौरान अपनाई गई नीतियों का व्यापक प्रभाव भारतीय समाज और राजनीति दोनों पर पड़ा, और ये अध्ययन करना प्रसांगिक हागा की उनके आर्थिक सुधारों ने भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था मैं एक मजबूत शक्ति के रूप में कैसे स्थापित किया।

मनमोहन सिंहः एक अर्थशास्त्री से प्रधानमंत्री तक का सफर और भारतीय राजनीति में उनकी भूमिका

मनमोहन सिंह भारतीय राजनीति में एक ऐसे नेता रहे हैं, जिनका योगदान केवल एक राजनीतिक के रूप में ही नहीं, बल्कि एक प्रख्यात अर्थशास्त्री और दूर दृष्टता नी ति निर्माता के रूप में भी याद किया जाता है। उनका जीवन सफर असाधारण रहा एक साथ की पूर्ण परिवार में जन्म लेकर ऑक्सफोर्ड और केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त करने तक, और फिर भारतीय

अर्थव्यवस्था के सबसे बड़े सुधारक और देश के प्रधानमंत्री बनने तक। उनके नेतृत्व में भारतीय अर्थव्यवस्था ने अभूतपूर्व विकास किया, न्यूज ओपन लेकिन राजनीतिक चुनौतियां और भ्रष्टाचार के आरोपों ने उनके कार्यकाल को विवादित भी बनाया।

अर्थशास्त्री से प्रधानमंत्री तकः एक असाधारण यात्रा

मनमोहन सिंह का राजनीतिक सफर 1991 में शुरू हुआ जब भारत विदेशी मुद्रा संकट से गुजर रहा था। उत्तर प्रदेश के पास मात्र दो सप्ताह का विदेशी मुद्रा भंडार था और आर्थिक नीतियां जटिल एवं नियंत्रण थी। प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिम्हा राव ने उन्हें वित्त मंत्री नियुक्त किया, और उन्होंने उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण (LPG) नीती लागू की। इन सुधारों के परिणामस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था ने तेजी से प्रगति की और 2000 के दशक में जीडीपी की औसत वृद्धि दर 7–8% तक पहुँच गई। इन सुधारों ने भारत को वैश्विक निवेशकों के लिए आकर्षक बना दिया और देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) का प्रवाह बढ़ा।

2004 में, जब कांग्रेस के नेतृत्व वाला संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (UPA) सत्ता में आया, तो सोनिया गाँधी ने मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री नियुक्त किया। भी भारत के पहले गैर राजनीतिक पृष्ठभूमि से आए प्रधानमंत्री बनें, जिन्हें व्यापक प्रशंसा मिली। उनके कार्यकाल में भारत ने अभूतपूर्व आर्थिक उछाल देखा–देश की अर्थव्यवस्था दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनी।

राजनैतिक बाधाएं और गठबंधन सरकार की चुनौतियां

मनमोहन सिंह को गठबंधन सरकार के नेतृत्व में कई राजनीतिक समझौतों और चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उनकी सरकार वाम दलों के समर्थन पर निर्भर थी, जिससे कई बार आर्थिक सुधारों को गति देने में मुश्किलें आई आई। उदाहरण के लिए, खुदरा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) को लेकर लंबे समय तक असमंजस बना रहा।

उनके कार्यकाल में सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक था भारत–अमेरिका परमाणु समझौता (2008), जिसे लेकर वाम दलों ने सरकार से समर्थन वापस ले लिया लेकिन मनमोहन सिंह अपने निर्णय पर अडिग रहे। समझौता भारत के लिए ऊर्जा सुरक्षा के नए अवसर लेकर आया, जिससे देश को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक उभरती हुई शक्ति के रूप में देखा जाने लगा।

हालांकि, उनके नेतृत्व क्षमता पर सवाल तब उठे जब 2G स्पेक्ट्रम घोटाला, कॉमनवेल्थ घोटाला और कोयला ब्लॉक आवंटन घोटाले जैसे भ्रष्टाचार के आरोप सामने आए। 2G घोटाले में सरकार पर 1.76 लाख करोड़ रुपए के नुकसान का आरोप लगा, जिससे उनकी छवि को गहरा धक्का

पहुंचा। उनकी आलोचक कहते हैं कि उन्होंने इन मुद्दों पर चुप्पी साधे रखी, जिससे उनकी "मौन" प्रधानमंत्री की छवि बनी। लेकिन उनके समर्थकों का मानना है कि वे गठबंधन सरकार की मजबूरियों के कारण कई मामलों में खुलकर हस्तक्षेप नहीं कर सके।

नेतृत्व की शैलीः शक्ति या कमजोरी?

मनमोहन सिंह की नेतृत्व शैली हमेशा चर्चा का विषय रही। वे एक विद्वान नेता थे, जो तकनीकी रूप से दक्ष थे जिनका योगदान नीतिनिर्माण में अमूल्य था। लेकिन वे एक करिश्माई राजनेता नहीं थे, जो जनता को बड़े स्तर पर संबोधित कर सके। उनकी चुप्पी को कई बार कमजोरी समझा गया, लेकिन कई विश्लेषकों का मानना है कि वे गठबंधन राजनीति की जटिलताओं में फंस गए थे।

2014 में, जब उनकी सरकार भ्रष्टाचार और महंगाई के आरोपों से घिरी थी टू नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा ने कांग्रेस को हराकर सत्ता में वापसी की। इसके बाद मनमोहन सिंह ने राजनीति से दूरी बना ली, लेकिन आज भी उन्हें एक ऐसे नेता के रूप में देखा जाता है, जिन्होंने भारत को आर्थिक मजबूती की दिशा में आगे बढ़ाया।

मनमोहन सिंहः भारत की अर्थव्यवस्था के बदलताव के नायक

डॉक्टर मनमोहन सिंह के नेतृत्व में किए गए आर्थिक सुधारों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को पूरी तरह बदल दिया। 1991 में देश गहरे आर्थिक संकट से गुजर रहा थाकृ विदेशी मुद्रा भंडार लगभग खत्म हो चुका था, और भारत को अपने आयात के लिए कर्ज लेना पड़ रहा था। इस मुश्किल हालात से निकलने के लिए सरकार ने बड़े बदलाव किए। लाइसेंस राज को हटाकर व्यापार को आसान बनाया गया, जिससे निजी कंपनियों को पढ़ने का मौका मिला। इसके अलावा उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG) की नीती अपनाई गई, जिससे भारतीय बाजार दुनिया के लिए खुल गया। विदेशी निवेश (FDI) को प्रोत्साहित किया गया, जिससे देश में आधुनिक तकनीकी आई और नए रोजगार पैदा हुए हालांकि शुरुआती दौर में कुछ चुनौतियां आईं, लेकिन लंबे समय में इन सुधारों ने भारत को एक मजबूत अर्थव्यवस्था बना दिया।

जब 2004 तक मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री बने, तो उन्होंने विकास को और समावेशी बनाने पर जोर दिया। गरीब तबके को बैंकिंग सेवाओं से जोड़ने के लिए जन धन योजना जैसी पहल की गई। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार बढ़ाने के लिए मनरेगा (MGNREGA) शुरू किया गया, जिससे गांव में रह रहे लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार आया। इन नीतियों के कारण भारत की अर्थव्यवस्था ने तेजी से तरक्की की, लेकिन 2011 के बाद वैश्विक मंदी और कुछ आंतरिक समस्याओं की वजह

से विकास दर थोड़ी कम हो गई। 2008 की वैश्विक आर्थिक मंदी से निपटने के लिए सरकार ने निवेश और सरकारी खर्च बढ़ाने जैसे कदम उठाएं जिससे भारत पर इसका असर कम हुआ।

अगर देखा जाए, तो मनमोहन सिंह की नीतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को नई दिशा दी। 1991 के सुधारों ने देश आर्थिक संकट से बाहर निकाला और उसे एक प्रतिस्पर्धात्मक और वैश्विक बाजार का हिस्सा बनाया। प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने वित्तीय समावेशन और ग्रामीण विकास पर ध्यान दिया, जिससे गरीब और पिछड़े वर्गों को भी आर्थिक सुधारों का लाभ मिला।

मनमोहन सिंह की लोकनीति आम जनता के प्रतिनिधियों और उनकी छवि

डॉक्टर मनमोहन सिंह सिर्फ एक आर्थिक सुधारक ही नहीं थे, बल्कि उन्होंने आम जनता के हितों को ध्यान में रखते हुए कई नीतियां भी लागू की। उनकी सरकार ने गरीबों किसानों और वंचित वर्गों को सशक्त बनाने के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं शुरू की जिनका असर आज भी देखा जा सकता है।

सब्सिडी और कल्याणकारी योजनाएं आम आदमी की मददरू मनमोहन सरकार ने गरीबों को राहत देने के लिए कई सब्सिडी योजनाएं चलाई। खाद्य सुरक्षा अधिनियम (2013), इस योजना के तहत देश की लगभग 67ः आबादी को सस्ता अनाज उपलब्ध कराया गया गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों को ₹1– ₹3 प्रति किलो की दर पर चावल और गेहूं दिया गया।

रसोई गैस (LPG) सब्सिडी, गरीब परिवारों को सस्ती दरों पर एलपीजी सिलेंडर उपलब्ध कराए गए, जिससे लकड़ी और कोयले पर निर्भरता कम हुई और महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार हुआ।

किसानों के लिए ऋण माफी योजना (2008), इस योजना के तहत ₹60,000 करोड़ तक के कृषि ऋण माफ किए गए, जिससे लाखों किसानों को राहत मिली।

शिक्षा और स्वास्थ्यः बुनियादी सुविधाओं में सुधार

मनमोहन सिंह सरकार ने शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में बड़े बदलाव किए।

शिक्षा का अधिकार (RTE) अधिनियम 2009, इस कानून के तहत 6–14। साल के बच्चे के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा की गारंटी दी गई। इसके कारण स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हुई।

राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM), इस योजना का मकसद ग्रामीण इलाकों में स्वास्थ्य सुविधाएं बेहतर बनाना था। इस दौरान कई सरकारी अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्र को अपग्रेड किया गया, जिससे मात्र मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर में कमी आई।

आधार योजना की नींवः डिजिटल इंडिया की शुरुआत

आज जिस आधार कार्ड का इस्तेमाल हर सरकारी और निजी काम में किया जाता है, उसकी नींव मनमोहन सिंह सरकार (2009) में रखी गई थी।

आधार नंबर जारी करने की योजना न्प्क।ए के तहत शुरू हुई जिसका उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को एक विशिष्ट डिजिटल पहचान देना था।

इसके जरिए सब्सिडी सीधे बैंक खातों में भेजने की व्यवस्था बनी, जिससे बिचौलियों की भूमिका खत्म हुई और भ्रष्टाचार में कमी आई।

मनमोहन सिंह भारतीय अर्थव्यवस्था के निर्माता और सुधारक के रूप में इतिहास में दर्ज रहेंगे। उनकी आर्थिक नीतियों ने भारत को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया, लेकिन उनकी राजनीतिक यात्रा चुनौतियों से भरी रही। आज भी उनकी विरासत को आर्थिक सुधारों और स्थिर विकास के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

संदर्भ सूची

- https://www.aajtak.in/amp/business/news/photo/manmohan-singh-reformer-showing-modern-indian-economy-new-liberal-way-tutd-1135972-2020-09-26
- https://www.bbc.com/hindi/india-57953959.amp
- https://www.jansatta.com/business/manmohan-singh-career-highlights-role-in-indian-economy-liberalisation-1991-economic-reforms/3750151/lite/
- https://www.jagran.com/news/national-manmohan-singh-was-the-first-pm-of-the-country-who-did-not-have-any-deep-political-background-23856514.html
- https://www.aajtak.in/amp/india/news/story/manmohan-singh-simple-leader-who-changed-direction-of-india-ntc-dskc-2130442-2024-12-26
- https://www.cnbctv18.com/india/manmohan-singh-visionary-leader-architect-of-india-economic-reforms-experts-19530892.htm/amp
- https://timesofindia.indiatimes.com/india/kind-or-not-history-remembers-him-highlights-from-manmohan-singhs-career/amp_articleshow/116689928.cms

♦♦♦♦♦

5

भारत–अमेरिका परमाणु समझौताः एक दूरदर्शी कूटनीतिक प्रयास

नरेंद्र कुमार

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का कार्यकाल भारतीय कूटनीति इतिहास में महत्वपूर्ण है। इसका मुख्य उदाहरण भारत–अमेरिका के बीच वर्ष 2008 में हुए परमाणु समझौते में स्पष्ट देखा जा सकता (Ramamurthy: 2016य141–143)। जिसके लिए उन्हें संसद मे अविश्वास प्रस्ताव का सामना करना पड़ा। उनके नेतृत्व में हुए भारत–अमेरिका परमाणु समझौते से न केवल भारत की ऊर्जा संकट का समाधान बना, बल्कि विश्व स्तर पर भारत की परमाणु नीति के लिए समर्थन जुटाने में भी सफल रहा। यह समझौता भारत को वैश्विक मंच पर एक नई पहचान दिलाने वाला कदम था। इसके लिए उन्हें आन्तरिक और बाहरी स्तर पर बड़ी बाधाओं का समाना करना पड़ा। आन्तरिक स्तर पर सहयोगी दल और विपक्ष इसमें बाधा डाल रहें थे, वहीं बाहरी स्तर पर चीन जैसा विरोधी देश सबसे बड़ी रुकावट था। डा. मनमोहन ने अपनी कूटनीतिक परिपक्कता से सभी प्रकार की बाधाओं दूर कर समझौते को अंतिम अंजाम तक पहुंचाया। यह लेख मुख्यतरू चार भागों मे विभाजित है। सबसे पहले संक्षेप मे भारत के परमाणु इतिहास को समझा गया है । इसके बाद यह जानने का प्रयास किया गया है कि भारत ने किस प्रकार अपनी कूटनीति से इसके लिए समर्थन जुटाया। अंत बताया गया है कि भारत की वर्तमान और भविष्य की ऊर्जा को पूरा करने में इस परमाणु संधि कैसे मुख्य भूमिका निभा रही है।

भारत का परमाणु इतिहास

भारत अपनी विदेश नीति मे विश्व शांति का समर्थक रहा है। परंतु विश्व में अमेरिका और सोवियत संघ के बीच शीत युद्ध ने परमाणु शक्ति की प्रतिस्पर्धा को बढ़ा दिया था। वहीं दूसरी ओर चीन द्वारा वर्ष 1964 में परमाणु परीक्षण ने भारत की सुरक्षा के लिए संकट खड़ा कर दिया था। इस प्रकार की घटनाओं को ध्यान में रखकर वर्ष 1974 में राजस्थान के पोखरण में भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण किया (Saraswat:2023;1&8)। परंतु भारत के इस परीक्षण पर दुनिया के देशों, खासकर अमेरिका ने बड़ी आपत्ति जताई, इसके विरोध मे भारत के ऊपर कई प्रकार के

तकनीकी और आर्थिक प्रतिबंध लगा दिए गए। इसके बाद परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एन.एस.जी) का गठन हुआ, जिसने भारत को परमाणु और रणनीतिक तकनीक से विश्व स्तर पर अलग–थलग कर दिया। भारत ने परमाणु अप्रसार संधि (एन.पी.टी) पर हस्ताक्षर करने से माना कर दिया (त्ंरहवचंसंदरू 2008) । भारत का मानना था कि यह संधि केवल कुछ गिने–चुने देशों को परमाणु हथियार रखने की अनुमति देती है। इस प्रकार की भेद–भाव पूर्ण रणनीति के कारण भारत को लम्बे समय तक अपने नागरिक और सैन्य परमाणु कार्यक्रमों के लिए कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

भारत और अमेरिका ने 1990 के दशक में अपने सम्बन्धों को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया। इसका मुख्य कारण भारत द्वारा अपनी अर्थव्यवस्था को विश्व की कम्पनियों के लिए खोलना था, जिसका लाभ अमेरिका की कम्पनियों को मिलने लगा था। इसके अलावा अमेरिका तेजी से बढ़ती भारतीय अर्थव्यवस्था का एक उभरते हुए लोकतांत्रिक बाजार के रूप में देख रहा था। परंतु वाजपेई सरकार के काल में वर्ष 1998 में हुए परमाणु परीक्षण के बाद अमेरिका ने भारत पर कई नए प्रतिबंध लगा दिए। वर्ष 2004 में डा.मनमोहन के नेतृत्व मे यूपीए सरकार के सत्ता में आने के बाद कई कूटनीतिक प्रयास शुरू हुए और वर्ष 2005 में अमेरिकी विदेश मंत्री के प्रस्ताव के बाद दोनों देशों ने विवादित परमाणु मुद्दे को हल करने की सहमति जताई।

भारत का कूटनीतिक प्रयास और अंतर्राष्ट्रीय समर्थन

डा.मनमोहन सिंह ने इस समझौते को मूर्त रूप देने के लिए 2005 से 2008 तक राजनीतिक और कूटनीतिक संघर्ष किया। वामपंथी राजनीतिक दल और भाजपा इस समझौते का विरोध कर रहे थे। वामपंथी दलों ने इसे अमेरिका के साथ गठजोड़ करार दिया और यूपीए सरकार से समर्थन वापस लेने की धमकी दी। परंतु मनमोहन सिंह ने दृढ़ता दिखाई. 2008 में वामपंथी दलों के द्वारा सरकार से समर्थन वापस लेने के बावजूद समाजवादी पार्टी के समर्थन से संसद में विश्वास मत प्राप्त करने में सफल रहे। घरेलू स्तर पर संसद मे समर्थन जूटने के बाद मनमोहन सिंह के सामने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग प्राप्त करने की चुनौती थी । भारत ने एन.एस.जी और अन्य संस्थाओं को मनाने का प्रयास किया जिसमें भारत का साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर अमेरिका दे रहा था। दोनों देशो के प्रयास से सितंबर 2008 में एन.एस.जी ने भारत के साथ परमाणु व्यापार करने की अनुमति प्रदान कर दी। भारत की कूटनीतिक जीत के लिए यह एक ऐतिहासिक दिन था।

भारत के लिए परमाणु समझौता मात्र ऊर्जा आपूर्ति तक सीमित नहीं था, बल्कि यह भारत को विश्व स्तर पर परमाणु शक्ति के रूप में वैश्विक मान्यता दिलाने वाला समझौता था। मनमोहन सिंह की यह प्रयास उनकी दृढ़ता, दूरदर्शिता और कूटनीति सफलता की बड़ी उपलब्धि है। भारत की बढ़तो ऊर्जा जरूरतों ने परमाणु ऊर्जा को उसकी अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण बना दिया, जिससे आने वाले समय में भारत की कोयले और तेल पर निर्भरता कम होगी और वह जलवायु परिवर्तन की समस्यों को कम करने में अपनी भूमिका सही से निभा पाएगा। इसके अलावा इस समझौते ने शांतिपूर्ण परमाणु ऊर्जा और वैश्विक सुरक्षा के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को मजबूती प्रदान की है। इस संधि के बाद भारत को परमाणु तकनीक और परमाणु प्लांट को चलाने के लिए यूरेनियम मिल सकेगा, जिसका लाभ भारत की वर्तमान और आने वाली पीढ़ी को मिलता रहेगा। अतः इस समझौते ने मनमोहन सिंह को भारतीय इतिहास के महानतम नेताओं में स्थान दिलाया जिसकी छाप भारतीय विकास में स्पष्ट देखी जा सकती है।

संदर्भ सूची

- Rajagopalan, Rajeshwari. Pillai (2008) 'Indo-US Nuclear Deal: implication for India & The Global N-Regime' Institute of Peace and Conflict Studies. (https:// www.jstor.org/ stable/resrep09312?seq=,)
- Saraswat. Samanvaya (2023) 'Poliheuristic Analysis: 2008 Indo-US Civil Nuclear Agreement' E-International Relations. (https://www.e ir.info/pdf/ 101877,)
- Ramamurthy. V.S (2016) 'The Indo-US nuclear deal- a decade after' Vol. 110, No. 2, 25 January, pp. 141-143, Current Science.

♦♦♦♦♦

Aiming High, Touching Sky

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

(पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र)

अकादमिक अनुसंधान केंद्र भवन

गुरु तेग बहादुर मार्ग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली– 110007

www.cgs.du.ac.in @cgsofficialdu office@cgs.du.ac.in +91-11-27666281